Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

Original Article

मुगलकाल में नगरीकरण

Vishwajit Das
UGC-NET
Email: vishwajitdas213@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180407
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 4(A)
Pp 28-31
April- 2026
Submitted: 18 Mar. 2026
Revised: 28 Mar. 2026
Accepted: 12 Apr. 2026
Published: 30 April. 2026

सारांश

मुगलकालीन भारत में देश की अधिकतर जनसंख्या गांवों में रहती थी। नगरों या कस्बों में रहने वालों की संख्या अपेक्षाकृत रूप से बहुत कम थी परन्तु कम जनसंख्या होते हुए भी नगरों का उस समय के जन–जीवन तथा इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता था। मुगलकाल के कई नगर धार्मिक और सांस्कृतिक और शिक्षा कारणों से बहुत विकास किया। इनमें से कई सूफी संतो के निवास व दरगाह तथा हिन्दू तीर्थ स्थानों के कारण तीर्थ यात्रियों के केन्द्र बिन्दु बने रहे। मुगलकाल के नगर विशाल क्षेत्रफल और जनसंख्या वाले थे। मुगलकाल में नगर व्यापारिक और सामरिक रूप से बहुत समृद्ध थे जिसके कारण यहा यातायात व संचार के मुख्य केन्द्र थे। हस्तशिल्प और उद्योगों के केन्द्र होने के कारण अनेक भारतीय नगरों ने यहाँ निर्मित वस्तुओं की विशिष्टता और गुणवत्ता के कारण विदेशों में भी प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी। बन्दरगाहों पर अनेक व्यापारिक नगरों का उदय हुआ सबसे महत्वपूर्ण बात ये थी की नगर राजनीति प्रशासन के केन्द्र बिन्दु बन गए थे।

मुख्य शब्दः *प्रशासनिक, व्यापारिक, सामरिक, यातायात, संचार, हस्तशिल्प, बन्दरगाह, सांस्कृतिक।*

मुगल काल में शहरी आबादी के बीच स्पष्ट वर्गीकरण था। सबसे मजबूत स्थिति शासक वर्ग की थी जिसमें सम्राट और उसका परिवार, सामंत और बड़े अधिकारी शामिल थे। मध्यम वर्ग में निम्न स्तर के कर्मचारी, व्यापारी और कुछ अन्य व्यवसायी वर्ग थे, जबकि साधारण स्तर पर शिल्पकार, कारीगर और सेवक वर्ग के लोग थे। विभिन्न वर्गों की स्थिति में परिवर्तन की सम्भावना हमेशा बनी रहती थी और ग्रामीण समुदाय की तुलना में शहरी समाज में अधिक गतिशीलता थी।[1] मुगलकालीन भारत में चार अलग–अलग प्रकार के शहरी केन्द्रों की पहचान की गयी है। इस काल में शहरों को उनके महत्व के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता था। वर्गीकरण केवल यह बताता है कि उस नगर में वह कार्य प्रमुख रूप से सम्पादित होता था परन्तु अन्य कार्य भी नगर में गौण रूप से होते थे। मुगलकालीन नगरों के मुख्य प्रकार निम्नलिखित थे।

मुगल काल में धार्मिक नगर धर्म, शिक्षा एवं संस्कृति के केन्द्र के रूप में स्थापित नगरों को इस श्रेणी में रखा जाता है। ये प्रायः छोटा शहर या कस्बा होता था। यहाँ अवस्थित मन्दिर, मस्जिद, तीर्थ स्थान तथा अन्य धार्मिक–सांस्कृतिक स्थल ही इस नगर की खसियत थी।[2] इन नगरों में साधु–संत, पुजारी, सूफी–संत, मौलाना इत्यादि लोगों की बसाहट होती थी। जहाँ पर मंदिर होता था, उसके आस–पास पूजा सामग्री, फुल–माला, मिठाई, बर्तन तथा पुजा पाठ से सम्बन्धित अन्य दुकानें होती थी। मंदिर के आस–पास श्रद्धालुओं के रहने के लिए धर्मशालाएँ भी बनाए जाते थे। तीर्थ स्थान के होने से विभिन्न प्रकार की जरूरतों को पूरा करने के लिए ग्रामीणों तथा स्थानीय लोगों की आवश्यकता बढ़ी। साधु–संत, पुजारी, मौलाना तथा सूफी–संत के अलावा दस्तकारों की भी इन धार्मिक शहरों में आवश्यकता हुई जिससे ग्रामीणों को अनेकों रोजगार के अवसर प्राप्त हुए। धर्मशालाओं के निर्माण में भी स्थानीय लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ। जिसके फलस्वरूप उनकी आर्थिक आय में बढ़ोत्तरी हुई।

इन नगरों में तीर्थ स्थल, मन्दिर, मस्जिद होने से लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं का आवागमन लगा रहता था।[3] इसके अतिरिक्त इन धार्मिक शहरों में विदेशी पर्यटकों का भी आवागमन लगा रहता था। जिनके रहने, खाने–पीने, घूमने तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति भी स्थानीय स्तर पर होती थी। अतः विभिन्न प्रकार की जरूरतों की पूर्ति के लिए ग्रामीणों की आवश्यकता बढ़ी। उन्हें अनेकों रोजगार के अवसर प्राप्त हुए तथा उनकी स्थिति सुदृढ़ हुई। ग्रामीण दस्तकार जो समाज के महत्वपूर्ण अंग थे, वे एक दूसरे की जरूरतों को पूरा कर एक सम्पन्न समाज की परिभाषा व्यक्त करते थे। शहरीकरण में सूफी सन्तों की गतिविधियों का योगदान नितान्त बना रहा। इस काल में अनेक धार्मिक शहरों का उद्भव एवं विकास सूफी सन्तों की खानकाहों तथा दरगाहों के कारण भी हुआ। उत्तर भारत में कोई ऐसा शहर नहीं था जहाँ कि इन सन्तों की खानकाहें, दायरें या दरगाहें न हो।[4] इन खानकाहों पर गरीबों को मुफ्त भोजन मिलता था, जिस कारण भी खानकाहों के निकटवर्ती अंचल में लोगों का सिमटना स्वाभाविक था।[5] इन खानकाहों के कारण व्यापारियों को बाजार मिला और विभिन्न ग्रामीणों को रोजगार मिला जिससे उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई। इस काल में अनेक तीर्थ स्थानीय नगर थे जैसे– वाराणसी, प्रयाग व मथुरा आदि। मध्यकाल में पुराने नगरों जैसे– काशी, प्रयाग, मथुरा, हरिद्वार, कन्नौज आदि के बसने के साथ ही मुसलमानों ने वहाँ मस्जिद, मकबरे तथा कब्रगाह बना लिए।[6] इलाहाबाद का दूसरा नाम प्रयाग है जो हिन्दुओं का एक तीर्थ स्थल है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
Vishwajit Das, UGC-NET

How to cite this article:
Das, V. (2026). मुगलकाल में नगरीकरण. Journal of research & development, 18(4(A)), 28–31. https://doi.org/10.5281/zenodo.20375607

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.20375607
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

इस शहर की स्थापना मुगल बादशाह अकबर के समय में उसकी भौगोलिक एवं राजनीतिक स्थिति के कारण हुई। मुगलों ने इसे कड़ा के स्थान पर सूबे की राजधानी बना दिया। यहीं से इलाहाबाद का प्रादुर्भाव एवं विकास शुरू हुआ। अकबर ने यहाँ पर एक दुर्ग का निर्माण कराया।

जहाँगीर के काल में इस शहर का और भी विकास हुआ। उसी प्रकार काशी प्राचीन काल के समान मध्यकाल में भी धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थल बना रहा। यहाँ की सांस्कृतिक गतिविधियों से मध्यकाल भी प्रभावित रहा है। ग्वालियर, कालपी, उज्जैन आदि तीर्थ स्थानीय शहर थे। ग्वालियर के विषय में इब्नबतूता[7] लिखते हैं कि यहाँ का दुर्ग पहाड़ी पर स्थित है। अजमेर शहर का महत्व तीर्थ स्थान के साथ–साथ प्रशासनिक केन्द्र के तौर पर भी था।[8] इसके साथ ही बनारस, मथुरा, काशी, तिरूमलई तथा उज्जैन आदि नगर इसी कोटि में आते थे।

मुगल काल में **प्रशासनिक** नगर थे जिनका मुख्य प्रयोजन प्रशासनिक था और जहाँ अन्य गतिविधियाँ जैसे– वस्तु निर्माण आदि गौण थे। इसलिए इन शहरों में ग्रामीणों की आबादी बहुत कम होती थी। वे व्यापार के लिए आते जाते रहते थे। ये नगर मुख्य रूप से राजनीति तथा प्रशासन के केन्द्र बिन्दु होते थे इसलिए इन नगरों का महत्व अपेक्षाकृत अधिक था। चहारदीवारी से घिरे इन सुरक्षित नगरों में

शासकीय कार्यालय, मस्जिद, मकबरे, मदरसे, खानकाहें तथा दरगाहें होती थी। इन नगरों में प्रशासनिक केन्द्र का दुर्गीकरण रहता था।[9] इस दुर्ग में अमीर तथा अधिकारी रहते थे। ये लोग प्रायः दुर्ग के निकट अपनी–अपनी हवेलियाँ बना लेते थे। इन प्रशासनिक नगरों में कुलीन वर्ग, अधिकारी वर्ग, मुकद्दम तथा राजकीय कार्यों से संबंधित लोगों की बसाहट होती थी। इन नगरों में सुरक्षा के समुचित बना लेते थे। इन प्रशासनिक नगरों में कुलीन वर्ग, अधिकारी वर्ग, मुकद्दम तथा राजकीय कार्यों से संबंधित लोगों की बसाहट होती थी। इन नगरों में सुरक्षा के समुचित इन्तजाम किए जाते थे। इस काल में प्रशासनिक नगरों में अपनी सुविधानुसार परिवर्तन किए गए, जिस कारण इन नगरों ने नया रूप ग्रहण कर लिया।[10] इन नगरों में व्यापारिक मंडी भी होती थी जहाँ व्यापारी अपने माल को खरीदते और बेचते थे। इन नगरों में विदेशियों का आना–जाना लगा रहता था। प्रशासनिक नगरों में दिल्ली, लाहौर, आगरा तथा साथ ही सूबाई राजधानियों को शुमार किया जा सकता है। बाद में पूणे, फैजाबाद, हैदराबाद जैसे शहर इसी प्रकार के केन्द्रों के रूप में उभरे।[11] मुस्लिम मध्यकाल के शुरूआत में कुतुबुद्दीन एबक ने दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया था। इस समय से दिल्ली मुस्लिम सत्ता का केन्द्र बिन्दु बनी रही, जो मुगलों के काल तक बराबर बनी रही।[12] शहर दिल्ली चौरस जमीन पर यमुना नदी के किनारे चंद्राकार बसा हुआ है। नदी को छोड़कर जिस पर नावों का पुल बंधा है, बाकी तीनों ओर रक्षा के लिए पक्की शहरपनाह बनी हुई है। जो नगर और किले दोनों को घेरे हुए है। दिल्ली से आगरा तक जो डेढ़ या पौने दो सौ मील लम्बी सड़क चली गई है, उन सड़कों के दोनों ओर जहाँगीर की आज्ञा से बड़े–बड़े पेड़ लगाए गए हैं। यह सड़क प्रायः पाँच सौ मील तक चली गई है। रास्ता दिखाने के लिए एक–एक मील की दूरी पर छोटी–छोटी बुर्जिया और आदमियों के पानी पीने तथा खेतों को सिंचने के लिए पक्के कुएँ बने हुए हैं।[13] शहर दिल्ली का विकास और वहाँ के निवासियों की सम्पन्नता इल्तुतमिश के शासन काल से शुरू हो गई थी, जो मुगलकाल तक अपनी वैभव की चरम सीमा पर पहुँच गई थी।[14] दिल्ली अनेक प्रकार के उद्योग धंधों, शिक्षा, व्यवसाय आदि का केन्द्र थी। यह कई प्रसिद्ध इमारतों के लिए भी प्रसिद्ध थी।

उद्योग धंधों तथा व्यवसायों के कारण ग्रामीणों को रोजगार मिलता था जिसके कारण वे गाँव से शहर की ओर पलायन करते थे। इन सबके साथ ही इसकी उन्नति का कारण यह था कि युद्धों आदि के कारण उजाड़ हुए एशिया, फारस के प्रसिद्ध नगरों के असंख्य विद्वान तथा कलाकार दिल्ली आकर बस गए थे जिन्होंने इस महानगर की श्री वृद्धि और गौरव वृद्धि में योगदान दिया था।[13] शहर दिल्ली का विकास और वहाँ के निवासियों की सम्पन्नता इल्तुतमिश के शासन काल से शुरू हो गई थी, जो मुगलकाल तक अपनी वैभव की चरम सीमा पर पहुँच गई थी।[14] दिल्ली अनेक प्रकार के उद्योग धंधों, शिक्षा, व्यवसाय आदि का केन्द्र थी। यह कई प्रसिद्ध इमारतों के लिए भी प्रसिद्ध थी। उद्योग धंधों तथा व्यवसायों के कारण ग्रामीणों को रोजगार मिलता था जिसके कारण वे गाँव से शहर की ओर पलायन करते थे। इन सबके साथ ही इसकी उन्नति का कारण यह था कि युद्धों आदि के कारण उजाड़ हुए एशिया, फारस के प्रसिद्ध नगरों के असंख्य विद्वान तथा कलाकार दिल्ली आकर बस गए थे जिन्होंने इस महानगर की श्री वृद्धि और गौरव वृद्धि में योगदान दिया था। खुसरो किरानुस्सादैन में दिल्ली नगर के विषय में लिखते हैं कि 'इस पर शासन इतना सुचारू और अचेतन का अनुभव करता है। इसकी स्थापना के पश्चात् सारे संसार में ऐसा कोई दूसरा नगर नहीं है, इसके ऐश्वर्य एवं भव्यता से जिसकी तुलना की जा सके।'[15] मुसलमानों द्वारा यहाँ पर सैनिक छावनी बनाने के साथ ही इस स्थल का विकास शुरू हुआ। दिल्ली के सुल्तानों की यह पश्चिम सीमा थी।

अतः इस सीमान्त क्षेत्र में दुर्ग बने। समय के साथ लाहौर मध्यकाल का महत्वपूर्ण स्थल बन गया। एडवर्ड टेरी के अनुसार पंजाब का मुख्य नगर लाहौर, जो भारत का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध नगर था।[16] अकबर के काल में फादर मोन्सेरेट ने भी लाहौर के संबंध में लिखा है कि जो अपने फैलाव, आबादी और धनराशि में, व्यापारियों के संकलन में, जो सारे एशिया से वहाँ एकत्र होते हैं, सम्पूर्ण एशिया या यूरोप में अद्वितीय है और इसकी आबादी इतनी घनी है कि गलियों में लोगों के कन्धे एक दूसरे से रगड़ खाते हैं।[17] लाहौर शहर का आकार आगरा शहर के आकार से बड़ा था तथा लाहौर यूरोप या एशिया के किसी भी अन्य नगर की तुलना में कम नहीं था। उसकी गणना विश्व के सबसे बड़े शहरों में की जाती थी।[18] आगरा शहर यमुना नदी के किनारे स्थित एक गाँव था। लोदी सुल्तान सिकन्दर शाह ने सर्वप्रथम यहाँ पर अपनी राजधानी बनाई थी बाद में आगरा मुगलों की राजधानी बनी, समय के साथ आगरा का काफी विकास हुआ।

यह शहर दिल्ली की अपेक्षा अधिक देहाती शहर था लेकिन उसका यह देहातीपन भद्दा नहीं बल्कि बहुत ही सुहावना मालूम होता है। किले, बादशाही महलों और इमारतों के कारण दिल्ली से उसकी बहुत से अंशों में समानता है तथा बहुत सी बातों में यह दिल्ली से बढ़ा–चढ़ा भी है। कुछ अन्य प्रशासनिक शहर कन्नौज, इन्द्रप्रस्थ तथा अजमेर थे। ये नगर आत्मनिर्भर नहीं होते थे बल्कि वे कस्बों और गाँवों पर निर्भर होते थे। अतः निकटवर्ती कस्बा तथा गाँव थल अथवा जल मार्गों से अवश्य जुड़े होते थे, जो नगरों की आवश्यकता पूरी करते थे। इस प्रकार सुविधानुसार लोग गाँवों से शहरों में अपेक्षा अधिक देहाती शहर था लेकिन उसका यह देहातीपन भद्दा नहीं बल्कि बहुत ही सुहावना मालूम होता है।

अतः निकटवर्ती कस्बा तथा गाँव थल अथवा जल मार्गों से अवश्य जुड़े होते थे, जो नगरों की आवश्यकता पूरी करते थे। इस प्रकार सुविधानुसार लोग गाँवों से शहरों में बसने लगे। समय के साथ इन शहरों में ग्रामीणों की बसाहट बढ़ी।[19] शहरों में उन्हें रोजगार मिला और उनकी आर्थिक स्थिति धीरे–धीरे सुदृढ़ होने लगी।

मुगल काल में औद्योगिक नगर में कुछ शहरों का विस्तार उद्योगों तथा व्यवसायों के कारण हुआ। ये वो नगर थे जिनमें वाणिज्य–व्यापार और वस्तु निर्माण की प्रधानता थी। इन नगरों को वाणिज्यिक केन्द्रों के रूप में विकसित किया गया था। उनकी प्रसिद्धि का आधार वहाँ स्थापित उद्योग तथा शिल्प थे। इन नगरों में व्यापारी, महाजन, सर्राफ, दलाल जैसे लोगों की बसाहट होती थी। इन नगरों में लोगों की भौतिक स्थितियों के अनुरूप उनके आवास तथा रहन–सहन की व्यवस्था होने लगी। लोगों की आवश्यकता बढ़ने से उत्पादन भी

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

बढ़ने लगा। उत्पादन बढ़ने से ग्रामीणों को रोजगार मिला। वे अपनी जरूरतों को पूरी करने के लिए गाँव से शहर की ओर खींचे चले आए। इन नगरों में व्यापारिक मंडिया होती थी जहाँ व्यापारी अपने तैयार माल को बेचते थे।

मुहम्मद हबीब[20] के अनुसार शहरों के विस्तार के साथ ही उनके ग्रामीण अंचलों से सम्बन्धों में परिवर्तन हुआ। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप नये शासक वर्गों का प्रादुर्भाव हुआ जिनकी रूचि वास्तुकारों एवं शिल्पकारों की जात में नहीं बल्कि उनके कलापरक उत्पादन में थी। वास्तुकारों एवं शिल्पकारों में गतिशीलता का अभाव था लेकिन दिल्ली के सुल्तानों और शासक वर्गों ने इन वर्गों को जाति–पाति के बन्धनों से मुक्त कर दिया। जिससे शहरी अर्थव्यवस्था को नई दिशा मिली। उद्योगों तथा व्यवसायों के कारण शहरों का विस्तार होने लगा। जिसके फलस्वरूप व्यवसायी जनों का विकास हुआ। नगरों की समृद्धि और प्रभाव को बनाये रखने में सबसे महत्वपूर्ण तत्व उनका व्यापारिक एवं आर्थिक महत्व था। इसके अभाव में कोई भी नगर अपनी प्रधानता को बनाये रखने में सक्षम नहीं था। अकबर का शाही राजधानी फतेहपुर सीकरी का उदाहरण इस तथ्य की पुष्टि करता है।[21] इस काल में मुगल शासकों के आर्थिक सुधारों के फलस्वरूप उत्तर भारत में आर्थिक एकीकरण की प्रवृति तीव्र हुई, फलस्वरूप व्यापार में उन्नति हुई। व्यापार में उन्नति के साथ ही यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों का आगमन होने लगा। इन तटवर्ती नगरों में बढ़ती व्यापारिक गतिविधियों ने मुगल साम्राज्य में नगरों की प्रगति में विशेष योगदान दिया।[22] अहमदाबाद, पटना, सूरत, लुधियाना, लाहौर, काबूल, सूरत, बनारस, आगरा, हैदराबाद, भंड़ौच आदि ऐसे ही नगर थे। गुजरात के सुल्तान अहमदशाह ने 1412 ई0 में साबरमती के तट पर अहमदाबाद शहर को बसाया था। अहमदाबाद के संबंध में अबुल फजल[23] ने लिखा है 'अपनी सर्वश्रेष्ठ समृद्धि की स्थिति में यह एक महत्वपूर्ण नगर है, जो अपनी जलवायु की रमणीयता और सारे विश्व की अनुपम वस्तुओं के होने से नितान्त अद्वितीय है।' काबुल नगर पश्चिमोत्तर भारत के अफगानी क्षेत्र में काबुल नदी घाटी पर स्थित है। काबुल नगर की प्रशंसा करते हुए वह लिखता है कि यहाँ हिन्दू और मुसलमान दोनों पर्याप्त मात्रा में निवास करते हैं। व्यापारिक दृष्टि से नगर अत्यन्त सुविधाजनक है। इस नगर में सरलता से जहाज आकर ठहर जाते हैं। यह नगर औद्योगिक स्थल के साथ–साथ सांस्कृतिक स्थल भी है।[24] मालाबार, मक्का, अदन तथा उर्मुज से व्यापार करने वाले अनेक धनवान व्यापारी यहाँ रहते हैं।

इस नगर की आमदनी का प्रमुख स्त्रोत चुंगी का महसूल था।[25] वस्त्र उद्योग अवध के खैराबाद और दरियाबाद शहरों की प्रसिद्धि का आधार था। बयाना को भी नील उत्पादन के लिए जाना जाता था। इस काल में कंधार शहर का भी विकास हुआ। इसका व्यापारिक महत्व काफी था। मुगलकाल में इस स्थल का काफी विकास हुआ। इनके अलावा कुछ व्यापारिक केन्द्र थे, जिनमें बयाना नील के लिए, पाटन रंगरेजी के लिए तथा खैराबाद सूती कपड़े के लिए प्रसिद्ध था। इस अवधि के दौरान प्रौद्योगिकी में आवश्यक परिवर्तन और सुधार हुआ जिसके फलस्वरूप उत्पादन में वृद्धि हुई।[26] ग्रामीणों को रोजगार के ढेरों अवसर प्राप्त हुए तथा वे धीरे–धीरे आत्मनिर्भर होने लगे।

मुगल काल में सैनिक व सामरिक दिल्ली मुख्यतः प्रशासनिक नगर था लेकिन इसमें व्यापारी, सूफी संत भी रहते थे तथा यहाँ मूल्यवान वस्तुओं का निर्माण होता था। मुगल भारत में ऐसे शहर नहीं थे जिन्हें स्पष्ट रूप से इस्लामी शहर कहा जा सकता था लेकिन ऐसे शहरों की भी कमी नहीं थी, जिनकी अधिकांश आबादी मुस्लिम थी और जहाँ उनके जीवन पर इस्लामी संस्कृति की स्पष्ट छाप थी। जो नगरों को अलग ही पहचान प्रदान करती थी। दिल्ली, आगरा, लखनऊ, इलाहाबाद, लाहौर आदि इसी प्रकार के नगर थे। इन नगरों की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख इस प्रकार किया गया है – दुर्गीकृत महल, नदी के किनारे बसाहट, मैदानी क्षेत्र, मुस्लिम धार्मिक इमारतों का बहुतायत में पाया जाना, बाजार, कारवां तथा सराय का होना।[28] ये विशेषताएँ सभी नगरों में समान रूप से पाई जाए, यह जरूरी नहीं था परन्तु अधिकांश को अब भी इन नगरों में देखा जा सकता है। मुगलकाल में बड़े नगरों की एक प्रमुख विशेषता यह रही है कि इस युग के जितने भी परकोटा वाले नगर हैं उन सभी की चहारदीवारी के बाहर भी बस्तियाँ बस गई थी।

इस प्रकार हम पाते हैं कि मुगल काल में शहरी आबादी के बीच स्पष्ट वर्गीकरण था तथा विभिन्न शहरों की अपनी–अपनी विशेषता थी। इस तरह की बस्तियाँ बसने का कारण यह था कि नगर की जनसंख्या इतनी अधिक हो गई थी कि लोग नगर के परकोटा से बाहर बसने के लिए मजबूर हो गए थे जैसे– दिल्ली तथा आगरा नगर। दूसरा कारण था, नगर के बाहर किसी धार्मिक महत्व के स्थल के होने के कारण इसके इर्द–गिर्द लोगों का बस जाना। दिल्ली में निजामुद्दीन तथा चिराग देलही गांव की बस्तियाँ तथा लाहौर व काश्मीर गेट के बाहर कदम शरीफ की बस्ती इसी प्रकार अस्तित्व में आई।[29] तीसरा कारण था, कुछ अमीरों तथा मनसबदारों का परकोटा से बाहर स्थाई रूप से पड़ाव डालना। शाहजहांनाबाद, जयसिंहपुरा, जसवन्तपुरा आदि इसी प्रकार की बस्तियाँ थीं।

निष्कर्ष

मुगल साम्राज्य में नगरों की व्यवस्था अत्यधिक संगठित और बहुआयामी थी, जिसमें राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य, धार्मिक और सांस्कृतिक तत्व शामिल थे। नगरों की प्रकृति और विशेषताएँमुगल नगर राजनीतिक और प्रशासनिक केंद्रों के रूप में काम करते थे, जैसे दिल्ली, आगरा, लाहौर, हैदराबाद, फैजाबाद आदि। इन नगरों का निर्माण अक्सर दुर्गों, नदियों के किनारे, मैदानी इलाकों और धार्मिक स्थलों के आसपास किया जाता था। नगरों में जामी मस्जिद, बाज़ार, राजमहल, शिक्षा केंद्र और हस्तशिल्प उद्योग जैसी सुविधाएँ उपलब्ध थीं। इन नगरों में व्यापार, उद्योग, धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ बहुत समृद्ध थीं, जिसके कारण ये यातायात और संचार के केंद्र भी थे। प्रशासनिक व्यवस्थानगरों का प्रबंधन कोतवाल के अधीन होता था, जो शहर की सुरक्षा, कानून–व्यवस्था, व्यापार नियमन और जनजीवन की देखरेख करता था। कोतवाल के साथ अन्य अधिकारी जैसे फौजदार, अमालगुज़ार और बाजार अधिकारी भी कार्य करते थे। नगरों में बाजार विशेष रूप से व्यवस्थित होते थे, जहाँ विभिन्न व्यापारिक गिल्ड्स और व्यापारिक संगठन कार्यरत थे। नगरों का सामाजिक और आर्थिक महत्वमुगल नगर व्यापारिक और उद्योग केंद्र थे, जहाँ हस्तशिल्प, वस्त्र और अन्य उत्पाद बनते थे जो देश–विदेश में प्रसिद्ध थे। धार्मिक और सांस्कृतिक तीर्थ स्थलों के कारण इन नगरों में तीर्थ यात्रियों का आगमन बहुत होता था। शहरी जीवन में विभिन्न धर्मों और समुदायों के लोग रहते थे, जिससे सांस्कृतिक विविधता बढ़ती थी। मुगल नगर व्यवस्था उस समय की अद्वितीय शहरी संरचना, बहुसांस्कृतिक जीवनशैली और विकसित प्रशासनिक व्यवस्था का उत्कृष्ट उदाहरण थी।

सदर्भ सूचीः–

1. राधेशरण, मध्यकालीन भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास, मध्यप्रदेश हिन्दी–247 ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2000, पृ.सं.–246
2. इब्नबतूता, द रेहला ऑफ इब्नबतूता, खण्ड–2, मेंहदी हुसैन (अंग्रेजी अनुवाद), ओरिएंटल इंस्टीच्यूट, बड़ौदा, 1953, पृ.सं.–145–148
3. इम्तियाज अहमद, मध्यकालीन भारत (8वीं से 18वीं शताब्दी), एक सर्वेक्षण, नेशनल पब्लिकेशन, पटना, 2007, पृ.सं.–471–472
4. सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत, सल्तनत काल से मुगलकाल तक (1526–1761), जवाहर पब्लिशर्स एवम् डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2013, पृ.सं.– 374

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

5. वही, पृ.सं.–375
6. राधेशरण, मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति (लगभग 1200–1750 ई0), मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2007, पृ.सं.–95–96
7. इब्नबतूता, पूर्वोद्धृत, पृ.सं.–163
8. राधेशरण, मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति (लगभग 1200–1750ई0), पूर्वोद्धृत, पृ. सं–103
9. के. एम. अशरफ, लाइफ एण्ड कंडिसंस ऑफ द पिपुल ऑफ हिन्दुस्तान, के.एस. लाल (अनुवादक), वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली, 1969, पृ. सं.–203
10. राधेशरण, मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति (लगभग 1200–1750ई0), पूर्वोद्धृत, पृ.सं. –95–96
11. सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत, सल्तनत काल से मुगलकाल तक (1526–1761), पूर्वोद्धृत, पृ.सं.–374–375
12. राधेशरण, मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति (लगभग 1200–1750 ई0), पूर्वोद्धृत, पृ.सं. –108
13. फैंक्सि बर्नियर, बर्नियर की भारत यात्रा, गंगा प्रसाद गुप्त (अनुवादक), नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 1997, पृ.सं.– 154–178
14. दिनेशचन्द्र भारद्वाज, मध्यकालीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, 1967, पृ.सं.–152
15. वही, पृ.सं.–153
16. उपेन्द्र ठाकुर, मुगलकालीन भारत, मोतीलाल बनारसी दास, पटना, 1979, पृ.सं.– 275–276
17. हरफूल सिह आर्य, मध्यकालीन समाज, धर्म, कला एवं वास्तुकला, रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2011, पृ.सं.–167–168
18. सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत, राजनीति, समाज और संस्कृति (8वीं से 17वीं सदी तक), पूर्वोद्धृत, पृ.सं.–303
19. राधेशरण, मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति (लगभग 1200–1750 ई0), पूर्वोद्धृत, पृ.सं. –105
20. मुहम्मद हबीब, पोलिटिक्स एण्ड सोसायटी डयूरिंग द अर्ली मेडिवल पीरियड, वॉल्यूम–1, के0ए0 निजामी (सम्पादक), पिपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1974, पृ.सं.–61
21. इरफान हबीब, अकबर एवं तत्कालीन भारत, नरेश 'नदीम' (अनुवादक) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ.सं.–180–188
22. इम्तियाज अहमद, पूर्वोद्धृत, पृ.सं.–284; राधेशरण, मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति (लगभग 1200–1750 ई0), पूर्वोद्धृत, पृ.सं.–105
23. अबुल फजल, आईने अकबरी, खण्ड–1, एच. ब्लाखमैन (अंग्रेजी अनुवाद), बिबलियोथेका इंडिका, कलकत्ता, 1873, पृ.सं.–387
24. विपिन बिहारी सिनहा, मध्यकालीन भारत का इतिहास (1200 ई0 से 1765 ई0 तक), अनुपम प्रकाशन, पटना, 1993, पृ.सं.–655
25. दिनेश चंद्र भारद्वाज, पूर्वोद्धृत, पृ.सं.–153
26. वही, पृ.सं.–154
27. सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत, सल्तनत काल से मुगलकाल तक (1526–1761), पूर्वोद्धृत, पृ.सं.–375
28. वही, पृ.सं.–376
29. इब्नबतूता, पूर्वोद्धृत, पृ.सं.–164